National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 09-12-2021, Accepted: 25-12-2021, Published: 10-01-2022
Volume 7, Issue 1, 2022, Page No. 64-66

# भारतीय संगीत शिक्षा प्रणालीः विश्लेषणात्मक अध्ययन

**डा. शम्पा चौधरी**
असोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी, संगीत विभाग, वी. एम. एल. जी. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**
प्राचीन काल में, भारतीय संगीत शिक्षा प्रणाली गुरु के प्रति समर्पण पर अधिक आधारित थी। धीरे–धीरे मौखिक ज्ञान को उसके संरक्षण के लिए लिखित रूप में बदल दिया गया। चूँकि संगीत को दुनिया के हर कोने में रहने वाले लोगों द्वारा सार्थक और उपयोगी बनाया जाता है, इसलिए सभी प्रकार के संगीत को संगीत के जानकार अथवा निर्माता द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सीखा और प्रसारित किया जाता है। जो लोग वास्तव में संगीत के लिए प्रेरित होते हैं, वे अक्सर दूसरों को जानने और इसे आगे बढ़ाने के लिए, इसे साझा करने के लिए समर्पित होते हैं। ''ये अत्यधिक प्रेरित संगीत निर्माता शिक्षण के कार्य में लगे हुए एवं परिसर पाए जाते हैं, वे संगीत शिक्षक हैं''। सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ एवं परिसर छात्रों की संगीत अध्ययन शुरू करने और जारी रखने की इच्छा के लिए जिम्मेदार है, साथ ही संगीत के अवसरों की प्रकृति और परिस्थितियों को भी शामिल करता है। संगीत शिक्षक का अपना संगीत ज्ञान और कौशल, साथ ही शिक्षक की व्यक्तित्व विशेषताएँ जिनमें उत्साह, गर्मजोशी, धैर्य, चातुर्य, विश्वास, अनुकूलनशीलता और सकारात्मक प्रोत्साहन शामिल हैं, छात्रों के सीखने की इच्छा के संभावित कारण हैं। प्रस्तुत लेख के माध्यम से भारतीय संगीत शिक्षा पर प्रकाश डाला गया है तथा वर्तमान समय में संगीत शिक्षा प्रणाली के समक्ष आ रही चुनौतियों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

**मूल शब्दः** संगीत शिक्षा, परंपरा, ज्ञान, कौशल, अभ्यास, शिक्षक, घराना

हिन्दुस्तानी संगीत परंपरा में शिक्षाशास्त्र के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक तत्वों को पारंपरिक भारतीय संदर्भों, बीसवीं सदी और अंतर–सांस्कृतिक संदर्भों में संगीत शिक्षा के अवलोकन में संबोधित किया गया है। विषयों में – भारतीय संस्कृति में मौखिकता, पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा, बीसवीं सदी के शैक्षिक सुधारों में राष्ट्रवाद की भूमिका और बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में प्रौद्योगिकी का प्रभाव शामिल है। संगीत में, सिखाई और प्रसारित की जाने वाली सामग्री में तकनीकी, सैद्धांतिक और सौंदर्य संबंधी तत्व शामिल होते हैं, साथ ही प्रदर्शन से संबंधित सामग्री जैसे कि प्रदर्शनों की सूची और सुधारात्मक व्याकरण भी शामिल होते हैं। संस्कृति से अटूट रूप से जुड़े होने के कारण, संगीत और संगीत संचरण सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान के परावर्तक और जनरेटर के रूप में कार्य करते हैं। गिरौक्स और मैकलारेन ने शिक्षाशास्त्र को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया है जिसके द्वारा शिक्षक और छात्र बातचीत करते हैं और अर्थ उत्पन्न करते हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि शिक्षक और छात्र किस तरह से विवादास्पद प्रथाओं और शक्ति/ज्ञान संबंधों के भीतर स्थित है। शिक्षाशास्त्र को ज्ञान के उत्पादन और प्रसार के कार्य के रूप में भी समझा जा सकता है। इन संदर्भों में, शिक्षाशास्त्र केवल शिक्षण पद्धति से कहीं अधिक व्यापक अवधारणा है। हिंदुस्तानी संगीत प्राचीन भारतीय संगीत से निकला है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इसने अपना वर्तमान स्वरूप चौदहवीं या पंद्रहवीं शताब्दी के बाद प्राप्त किया। भारतीय संगीत सिद्धांत की सबसे पहली विस्तृत व्याख्या भरत द्वारा दिए गए नाट्यशास्त्र में मिलती है, जिसका समय चौथी शताब्दी का है। हिंदुस्तानी संगीत पारंपरिक रूप से गुरु–शिष्य परम्परा की संस्था के माध्यम से प्रसारित किया गया था। एक शैक्षणिक पद्धति जिसमें एक गुरु अपने ज्ञान को एक शिष्य को देता है, वास्तव में यह गुरु–शिष्य परम्परा प्राचीन भारत में शिक्षा के अन्य सभी विषयों पर भी लागू होती है।

गुरु संगीत परंपरा की निरंतरता के लिए जिम्मेदार है, संगीत सामग्री को अगली पीढ़ी तक संरक्षित, विकसित और हस्तांतरित करने का कार्य करता है। इसके अलावा, गुरु प्रदर्शन के दौरान मंच पर लाकर योग्य शिष्यों को प्रदर्शन अभ्यास में प्रशिक्षित करता है, इस प्रशिक्षण के माध्यम से शिष्य को मंच पर आत्मविश्वास, प्रस्तुति का तरीका, प्रस्तुति के सिद्धांत प्राप्त होते हैं जो उसे एक परिपक्व और अनुभवी कलाकार के रूप में विकसित होने में मदद करते हैं। सामाजिक रूप से, गुरु का चुनाव जीवनसाथी चुनने से भी अधिक महत्वपूर्ण है। एक संगीतकार की स्थिति और संगीत की पहचान उसकी संगीत विरासत पर आधारित होती है और उसके गुरु के नाम और पहचान पर निर्भर करती है। किसी शिष्य की सामाजिक और संगीत पहचान, साथ ही संगीत कौशल का विकास, एक सम्मानित गुरु को खोजने पर निर्भर करता है जो आवश्यक शैक्षिक और सामाजिक भूमिकाओं को पूरा करता है। गुरु शिष्य को जीवन शैली के रूप में संगीत की स्वीकृति प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। इसका मतलब आमतौर पर अभ्यास/साधना और अनुशासन का जीवन होता है, जिसका अर्थ है अभ्यास और अनुशासन, जो अंततः आत्म–साक्षात्कार की ओर ले जाता है। संगीत के प्रति इस दृष्टिकोण और भक्ति एवं अनुशासन की जीवनशैली को बढ़ावा देने में, गुरु की यह जिम्मेदारी है कि वह ऐसा माहौल प्रदान करे जहाँ शिष्य अन्य चिंताओं से मुक्त होकर सीखने पर ध्यान केंद्रित कर सके। यह गुरुकुल की प्राचीन भारतीय प्रथा के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जिसे सीखने के लिए गुरु के घर में रहने के रूप में परिभाषित किया जाता है। इन सभी दायित्वों को पारिश्रमिक की अपेक्षा के बिना पूरा किया जाता है; ''गुरु को अपने शिष्यों से पैसे स्वीकार नहीं करने चाहिए'' लेकिन वह केवल भेंट या दक्षिणा स्वीकार कर सकता है। गुरु का दर्जा केवल शिष्य द्वारा गुरु को इस तरह का सम्मान देने के माध्यम से प्राप्त होता है। गुरु का निर्धारण ''एक व्यक्तिपरक मूल्यांकन है; एक संभावित शिष्य किसी विशेष व्यक्ति से प्राप्त लाभों के अस्तित्व और सीमा का मूल्यांकन करता है और यदि वह उन्हें पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण पाता है, तो गुरुत्व एक वास्तविकता बन जाता है''।

## संगीत शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

संगीत शिक्षा की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। संगीत मनुष्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन रहा है।

इसमें शिक्षा का समावेश करने से नैतिकता का आविर्भाव हो जाता है। शिक्षा सुना सुनियोजित प्रकृया है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ उसमें प्रलौकित तत्वों का समावेश कर सर्वांगीण विकास का कारण बनती है तथा एक सभ्य, सुसंस्कृत, सुयोग्य एवं सहृदय व्यक्ति का निर्माण करती है। वैदिक कालखण्ड में संगीत की शिक्षा गुरु–शिष्य परंपरा के रूप में प्रचलित थी। रामायण काल में संगीत की यथाविधि शिक्षण एवं अध्ययन किया जाता था। महाभारत काल में भी संगीत शिक्षा का प्रचलन था। इसके अतिरिक्त बौध्दकाल एवं जैन धर्म में नृत्य कला एवं संगीत कला की यथाविधि शिक्षा दी जाती थी, ऐसा प्रमाण मिलता है। समय के साथ– साथ संगीत शिक्षण परंपरा में भी बदलाव आना स्वाभाविक एवं नैसर्गिक था। आधुनिक काल में शिक्षा परंपरा की दो विधियाँ प्रचलित है – घराना एवं संस्थागत।

**घराना पद्धतिः** भारतीय संगीत कला के प्राचीन गायकों में कुछ ऐसे प्रसिद्ध गायक या वादक हुए हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा से एक विशेष प्रकार की गायन। वादन शैली को विकसित कर, अपने पुत्रों एवं शिष्यों को सिखाकर प्रचलित किया। इसे ही 'घराना' कहा गया।

**संस्थागत पद्धतिः** वर्तमान समय में यह संगीत शिक्षण परंपरा अधिक प्रचलित है जिसमें विद्यार्थी संगीत की शिक्षा, शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से ग्रहण करते हैं।
स्वतंत्रता प्राप्त के पश्चात भारत में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में अमूल परिवर्तन दृष्टिगत हुआ है। शिक्षा पद्धति के तीन मुख्य आधार हैं– पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री एवं मूल्यांकन । संगीत शिक्षा के क्षेत्र में भिन्न–भिन्न स्तर पर संगीत की मानकीकृत ैजंदकमतकपेमक) शिक्षण दिए जाने हेतु अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

## संगीत शिक्षा में चुनौतियाँ

संगीत शिक्षा कार्यक्रमों को विविधता और समावेश सुनिश्चित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। यहाँ इस विषय को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। इन विशयों को संबोधित करने के उपरांत, संस्थान अपने छात्रों के लिए अधिक समृद्ध और समावेशी संगीत सीखने के अनुभव को बढ़ावा दे सकते हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में शिक्षकों और संस्थानों के सामने आने वाली कुछ लगातार चुनौतियाँ एवं निराकरण इस प्रकार हैं।
**सीखने के रुझान में बदलावः** शैक्षिक संस्थानों को समय के साथ सीखने के बदलते रुझान और छात्रों की प्राथमिकताओं के अनुकूल होने की आवश्यकता है। ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा पर अधिक जोर देने के साथ, छात्रों को संगीत सिखाने और सार्थक तरीके से उन्हें जोड़ने के प्रभावी तरीके खोजना महत्वपूर्ण हो जाता है।

**मूल्यांकन और मानकीकरणः** संगीत शिक्षा की प्रभावशीलता को मापना चुनौतीपूर्ण हो सकता है क्योंकि पारंपरिक मानकीकृत परीक्षण विधियाँ किसी छात्र के संगीत विकास और समझ को सटीक रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर सकती है।

**प्रौद्योगिकी एकीकरणः** जबकि प्रौद्योगिकी संगीत शिक्षा को बढ़ा सकती है, इसे पाठ्यक्रम में प्रभावी रूप से एकीकृत करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और उपयुक्त उपकरणों तक पहुँच की आवश्यकता होती है। कुछ संस्थान तेजी से विकसित हो रही तकनीकों के साथ तालमेल बिठाने में संघर्ष कर सकते हैं।

**उपकरणों और सुविधाओं तक पहुँचः** सभी छात्रों के पास संगीत वाद्ययंत्र और उचित अभ्यास सुविधाएँ नहीं होती हैं, जो संगीत शिक्षा में पूरी तरह से शामिल होने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकती हैं।

**कला शिक्षा पर कम जोरः** कुछ शैक्षिक प्रणालियों में, संगीत सहित कला शिक्षा की तुलना में ैज्म्ड (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) विषय पर अधिक जोर देने की प्रवृत्ति रही है। इसका परिणाम संगीत शिक्षा के लिए कक्षा का समय कम हो सकता है या यहाँ तक कि संगीत कार्यक्रमों को पूरी तरह से समाप्त भी किया जा सकता है।

**आकलन और मूल्यांकनः** छात्रों की संगीत क्षमताओं का मूल्यांकन और आकलन करना चुनौतीपूर्ण और व्यक्तिपरक हो सकता है। छात्रों की प्रगति और सीखने के परिणामों को मापने के लिए निष्पक्ष और व्यापक मूल्यांकन विधियों का विकास करना महत्वपूर्ण है।

**पाठ्येतर सहायताः** छात्रों को नियमित कक्षा के घंटों के बाहर संगीत समूहों, बैंड या ऑर्केस्ट्रा में भाग लेने के अवसर प्रदान करना शेड्यूलिंग संघर्षों और सीमित संसाधनों के कारण चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

**शिक्षकों की कमी और गुणवत्ताः** योग्य संगीत शिक्षक ढूँढना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर ग्रामीण या आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में। इसके अतिरिक्त, उपलब्ध शिक्षकों की विशेषज्ञता और अनुभव के आधार पर संगीत निर्देश की गुणवत्ता भिन्न हो सकती है।
**फंडिंग और बजट की कमीः** कई संगीत शिक्षा कार्यक्रम सीमित फंडिंग से जूझते हैं, जिसके कारण संसाधनों की कमी, पुराने उपकरण और छात्रों के लिए संगीत से संबंधित गतिविधियों में भाग लेने के कम अवसर हो सकते हैं। संगीत शिक्षा को सैद्धांतिक ज्ञान से परे जाना चाहिए और छात्रों को पर्याप्त प्रदर्शन के अवसर प्रदान करने चाहिए। हालाँकि, बजट की कमी, समय की सीमाएँ या अन्य कारक छात्रों के लिए उपलब्ध संगीत कार्यक्रमों, गायन और प्रदर्शनों की संख्या को सीमित कर सकते हैं।

## निष्कर्ष

संगीत शिक्षकों को संगीत शिक्षा में नवीनतम शिक्षण विधियों, प्रौद्योगिकी और रुझानों से अपडेट रहने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास की आवश्यकता होती है। ऐतिहासिक रूप से, संगीत शिक्षा हमेशा समावेशी नहीं रही है और पाठ्यक्रम में विविध संगीत परंपरा और संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व कम हो सकता है। विविधता और समावेशन को बढ़ावा देने के प्रयासों को प्रतिरोध या कार्यान्वयन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। संगीत शिक्षा कार्यक्रमों की सफलता और स्थिरता के लिए माता–पिता और व्यापक समुदाय से समर्थन प्राप्त करना आवश्यक है। शिक्षकों को विभिन्न हितधारकों के लिए संगीत शिक्षा के महत्व की वकालत करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
संगीत शिक्षा के समक्ष आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षकों, प्रशासकों, नीति निर्माताओं, माता–पिता और बड़े पैमाने पर समुदाय के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। संगीत की ि ाक्षा से छात्रों के शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाना शैक्षिक संस्थानों में इसके स्थान को सुरक्षित करने में मदद कर सकता है। इसके अतिरिक्त, रणनीतिक योजना बनाना, साझेदारी का लाभ उठाना और वैकल्पिक वित्तपोषण स्रोतों की तलाश करना, संस्थानों में संगीत शिक्षा कार्यक्रमों को बनाए रखने और मजबूत करने में मदद कर सकता है। संगीत शिक्षकों को छात्रों के साथ–साथ शैक्षिक अधिकारियों के सम्मुख संगीत शिक्षा से प्राप्त होने वाले लाभों से अवगत कराना चाहिए। जिसमें बेहतर संज्ञानात्मक क्षमताएँ, टीमवर्क कौशल और भावनात्मक विकास

शामिल हैं, जो विषय में रुचि को जारी रखने में योगदान दे सकते हैं। संगीत को अध्ययन के अन्य क्षेत्रों में एकीकृत करने के लिए भी प्रयास किया जाना चाहिए।

विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को इस क्षेत्र में अधिक छात्रों को आकर्षित करने के लिए मजबूत एवं प्रभावशाली संगीत शिक्षा कार्यक्रम विकसित करना चाहिए। नई शिक्षा नीति 2020 में यह भी कहा गया है कि ''भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, इंडोलॉजी, कला, नृत्य, रंगमंच, शिक्षा, गणित, सांख्यिकी, शुद्ध और अनुप्रयुक्त विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, खेल, अनुवाद और व्याख्या, और ऐसे अन्य विषयों के विभाग जो एक बहु–विषयक, प्रेरक भारतीय शिक्षा और वातावरण के लिए आवश्यक हैं, सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में स्थापित और मजबूत किए जाएँगे। इन विषयों के लिए सभी स्नातक डिग्री कार्यक्रमों में क्रेडिट दिए जाएँगे।''

संगीत शिक्षकों के लिए नियमित व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं, सम्मेलनों और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए संसाधन और समय आवंटित करना चाहिए ताकि वे अपने शिक्षण कौशल और वृद्धि कर सकें और इस क्षेत्र में समयानुसार प्रगति के साथ बने रह सकें।

शिक्षा का मतलब सिर्फ पाठ्यपुस्तको, परीक्षाओं एवं नौकरी प्राप्त करना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ ऐसे लोगों को विकसित करना जो जीवन में सफल होने के लिए विभिन्न कौशल एवं ज्ञान से युक्त हों। इसी कारण संगीत प्रत्येक छान की शैक्षिक याला का अभिन्न अंग होना चाहिए क्योंकि इस विषय में विभिन्न संस्कृ तियों, शैलियों एवं ऐतिहासिक अवधियों के अध्ययन तो शामिल हैं ही साय ही बृहद दृश्टिकोण से इसमें अन्य विषय भी शामिल हैं। जैसे – संगीत में ध्वनि का अध्ययन करते है और ध्वनि भौतिकी का विषय है। संगीत मनोविज्ञान एवं दर्शन से भी संबंधित है। इस प्रकार संगीत संकाय में विविधता (Diversity) तथा अंतःविषय द्वश्टिकोण (Interdisciplinary approach) व्यापक परिमिति में सम्मिलित है जो उनके विश्लेषणात्मक क्षमता (Analytical capacity) की वृद्धि करता है।

संगीत एक सार्वभौमिक भाषा है जो सीमाओं, संस्कृतियों और पीढ़ियों से उपर है। संगीत शिक्षा द्वारा प्राप्त होनेवाले संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं रचनात्मक लाभ छात्रों के जीवन को समृद्ध बनाता है। इसके अतिरिक्त संगीत शिक्षा के फलस्वरूप होनेवाले सामाजिक एवं कौशल विकास छात्रों को आत्मविश्वासी, तनावमुक्त तथा सकारात्मक बनाता है। वस्तुतः शिक्षा में 'संगीत' एक अच्छे व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## संदर्भ सूची


1. Kapur, Dr Radhika, Understanding the Meaning and Significance of Pedagogy, 2020, 2.
2. Husbands, Pearce, What Makes Great Pedagogy? Nine Claims from Research, National College for School Leadership, 2012, 11.
3. Jones D Brett, Motivating Students to Engage in Learning: The Music Model of Academic Motivation, International Journal of Teaching and Learning,2009:21:272.
4. Giroux, McLaren, Critical Pedagogy, The State and Cultural Struggle, Page-81
5. Oppenheim Hale Michael, Cross-Cultural Pedagogy in North Indian Classical Music, B.A. Kenyon College, 2007, 39.
6. Shankar Pt. Ravi, My Music My Life, 24.
7. New Education Policy, 2020, 36.
8. Yaman, Dr. Ashok Kumar, Sangeet Ratnavali, Abhishek Publication, Chandigarh, 487, 521.